

साक्षात्कार

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त लेखक एवं आध्यात्मिक चिन्तक श्री प्रभुदयाल मिश्र से पंकज चौधरी की वार्ता।

प्रश्न— जब आप अमेरिका पहुँचे तो आपको वहाँ कैसा लगा ?

उत्तर—हमारा यान जब पेरिस से सुबह उड़ा तो वह समय को पीछे धकेलते हुये आगे बढ़ा जा रहा था और जब हमारा यान अमेरिका पहुँचा तो अतल महासागर की गहराईयों में नीचे झाँकते हुये बादलों के बीच में देखा तो मुझे सुन्दर काण्ड की चौपाईया याद आ गई जिसमें तुलसीदास जी ने लंका का चित्रण स्वर्ग से किया है वहाँ मुझे दृश्य के बाद यही महसूस हुआ ।

और जब हम न्यूयार्क हवाई अड्डे पर हवाई जहाज से उतरे तो हमारा बेटा अनुभव हमें लेने आया । जब हमारी कार सड़क से गुजर रही थी तो हमने देखा कि इतनी चौड़ी सड़कों (करीब 400 फीट) की तो भारत में कल्पना भी नहीं की जा सकती । और उसके बाद हमारा ध्यान बड़ी-बड़ी इमारतों अनेक ऐतिहासिक दृश्यों पर गया तो लगा कि अगर संसार में कहीं स्वर्ग है तो वह अमेरिका देश में ही है । यहाँ के लोगों में अनुशासन देखकर मैं स्तब्ध रह गया । और लोगों में क्या यहाँ तो जानवर, पक्षी , हवा तक में अनुशासन है जो भारत के किसी विद्यालय में नहीं होता जो कि अनुशासन आलय होते हैं । अनुशासन ही विकास का प्रथम अध्याय है वो अनुशासन अमेरिका की आवोहवा में हर समय रहता है । और जब मैंने वहाँ भ्रमण किया तो मैंने देखा यहाँ के हवाई जहाज, हवाई अड्डा, चौड़ी-2 सड़कें, गगनचुम्बी इमारतें, खूबसूरत उद्यान , बड़े-2 मैदान तो मुझे अंदर से अहसास हुआ कि इनको ईश्वर ने ही बनाया होगा । और उसके बाद मैंने अपना विचार अपने बेटे अनुभव से प्रकट किया और कहाँ कि सुख, समृद्धि, स्वच्छता, अनुशासन अमेरिका की पहचान है ।

प्रश्न— अमेरिका में हिन्दी भाषा की क्या स्थिति है ?

उत्तर—जहाँ कहीं भी अमेरिका में गये वहाँ करीब 10 प्रतिशत भारतीय मिले । टूरिस्ट प्लेस, कुछ नगर तथा न्यूजर्सी नगर में भारतीयों की अधिकता है । और यह स्वाभाविक है जहाँ भारतीय होंगे वहाँ हिन्दी होगी । अगर कोई व्यक्ति अंग्रेजी नहीं जानता है तो उसे वहाँ कोई कठिनाई नहीं होगी । क्योंकि पूरे अमेरिका में भारतीय लोग पर्याप्त मात्रा में हैं । एक जगह हम गये वहाँ हमारी मुलाकात 6 साल की बच्ची और 8 साल के बच्चे से हुई । इन दोनों ने मुझे पूरी विभीषण गीता सुनाई जो कि आश्चर्य जनक बात थी । इन बच्चों ने हमें तबला सुनाया, गाना सुनाया, नृत्य दिखाया । और जब हमने इन बच्चों से सत्य साई बाबा की बात कही तो उन्होंने तुरंत साई बाबा के चमत्कारों के दृश्य हमको इंटरनेट पर दिखाये । इसके बाद इन बच्चों ने मुझसे प्रश्न किया कि अगर साई बाबा इतने चमत्कारी हैं तो इस दुनिया से काइम क्यों नहीं समाप्त कर देते, बिन लादेन जैसे आतंकवादियों को क्यों नहीं मार देते । तो मैंने उत्तर दिया कि बाबा इस दुनिया में विनाश के लिए नहीं अवतरित हुये हैं वह संरचनात्मक कार्यों तथा समपरिवर्तन के लिए अवतरित हुये हैं ।

मेरे विचार में अमेरिका में हिन्दी भाषा की अपेक्षा हिन्दु और हिन्दुस्तान की संस्कृति के प्रति अधिक लगाव दिखता है । वहाँ के लोग हिन्दुस्तान की संस्कृति को विश्व की धरोहर मानते हैं । हमारा देश प्राचीन समय में जो समृद्धि और खुशहाली का देश था उसका गुणगान हमारी संस्कृति करती है । इसी कारण विश्व के लोग हमारी संस्कृति के गुणगान गाते हैं । क्योंकि उनको हमारी संस्कृति में हमारा प्राचीन गौरवपूर्ण इतिहास दिखाई देता है । जिस कारण हमारी संस्कृति विश्व के हर देश को आकर्षित करती है ।

प्रश्न— 11 सितम्बर के हादसे के बाद अमेरिका में सुरक्षा व्यवस्था में क्या सुधार किये गये हैं ?

उत्तर— 11 सितम्बर का दिन अमेरिका के इतिहास में काला दिवस हसे गया है । न्यूयार्क की वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर और पेन्टागन विश्व की दो बड़ी इमारतें जो क्षण मात्र में ध्वस्त हो गईं यह आतंकवाद का परिणाम था । जिसमें हजारों लोग क्षण मात्र में कालकवलित हो गये आगे ऐसे कोई हादसे न हो इसके लिए अमेरिका ही नहीं विश्व के हर देश को हाथ में हाथ डालकर लड़ना चाहिए जब हम इस स्थान पर घूम रहे तो उपर दो हेलिकॉप्टर आसमान में पहरेदारी कर रहे थे । जब हम पानी के जहाज के द्वारा समुद्री टापू पर जा रहे थे तो पहले भारी जांख पुलिस द्वारा की गई गली-गली में मजबूत अमेरिकन सिपाही (स्त्री और पुरुष) हाथ में रिवोल्वर लिए हुए तैनात देखे जा सकते हैं ।

प्रश्न— भारत अमेरिका से कितना पीछे है और उसे अमेरिका के बराबर या उससे आगे पहुंचने में कितना समय लगेगा ?

उत्तर— यह बड़ा ही विचित्र लगता है यह देश इतने आगे कैसे पहुंच गया । बूत बड़ा क्षेत्रफल, बहुत सारे संसाधन प्रकृति ने इस देश को दिये हैं जिस कारण इसके विकास में इनकी अहम भूमिका रही होगी । इसके अलावा यहां प्राकृतिक प्रकोप भी है । कहीं कहीं असीम वर्षा होती है और कहीं कहीं भारी शीत । जिसके बावजूद भी गगन चुम्बी इमारतें अटटालिकायें , संग्रहालय, आश्चर्यजनक पुल, हवाई अड्डे, रेल यातायात, परिवहन, उपग्रह, देश ने कैसे बना लिये इसके पीछे जरूर एकजुट संकल्प शक्ति ही हो सकती है । जिसने यह आश्चर्यजनक कार्य करके दिखाया । अमेरिका से भारत की तुलना बहुत कठिन लगती है । लेकिन संसार में असंभव नाम की कोई चीज नहीं है । नेपोलियन ने तो असंभव नाम का शब्द ही अपनी किताब में से हटा दिया था । हमारा देश अमेरिका से पीछे है और कितना पीछे है इसके लिए विश्व में कोई थर्मामीटर नहीं बना है । लेकिन फिर भी मुझमें जितनी समझ है उसके हिसाब से भारत अमेरिका से बहुत पीछे है और उसके बराबर और उससे अधिक आगे तो दूर आस-पास पहुंचने में भी भारत को बहुत कठोर परिश्रम करना पड़ेगा । भारत के अमेरिका से पीछे रहने के अनेक कारण हैं । पहला कारण है यहां नागरिकों में भाईचारे की भावना नष्ट हो गयी है, देश भावना नगण्य हो गयी है, लोग देश के नियम कानून पर ध्यान नहीं देते, कानून के प्रति सम्मान खत्म हो गया है । यहां का शासन, प्रशासन योजनाओं को सही ढंग से क्रियान्वित नहीं करते हैं । इसका खामियाजा भारत को भुगतना पड़ रहा है । यही वह पहला कारण है जो भारत को दिनोंदिन पीछे ले जा रहा है इसका मतलब यह नहीं कि भारत में वह शक्ति नहीं है जो भारत को संसार के नक्शे पर कोहिनूर की तरह चमकायेगी । ऐसा मैं नहीं मानता अगर वह शक्ति नहीं होती तो भारत प्राचीन समय में इतना समृद्ध एवं शक्तिशाली नहीं होता तथा इसको सोने की चिड़िया होने की उपमा नहीं मिली होती ।

दूसरा कारण यह है कि भारत एक लंबे समय से गुलामी की मार झेलता आ रहा है जिस कारण यहां के अमूल्य संसाधन नष्ट हो गये, संस्कृत एवं सभ्यता विखंडित हो गयी, नियम कानून के ढंग बदल गये हैं । एक से एक आश्चर्यजनक चीजे आक्रमणकारी या तो अपने देश में ले गये या उनको नष्ट करने में सफल रहे जिस कारण हमारा देश सोने की चिड़िया से नबाजे जाने वाला, बेकारी और लाचारी की चिड़िया से नबाजा जाने लगा । लेकिन हमारे देश में अगर अभी-अभी कोई शक्ति जीवित है जिससे देश को संसार के नक्शे पर चमकाया जा सकता है तो वह है देश भक्ति की शक्ति । जो कि भारत के नागरिकों में कूट-2 कर भरी है । यही वह शक्ति है जो देश को बहुत आगे ले जा सकती है और कहा भी गया है कि भारत भविष्य में विश्व की सबसे बड़ी शक्ति होगा यह बात अतिशयोक्तिपूर्ण लगती है । लेकिन क्रांतियां हुई हैं और क्रांति भारत में किस रूप में और कब आयेगी अनुमान लगाना कठिन है ।

अमेरिका में भाईचारे की भावना कूट-कूट कर भरी है । वहां के नागरिक देश के कानून के आगे नतमस्तक हो जाते हैं । इनमें देश के प्रति राष्ट्र भावना अतनी तो नहीं है जितनी भारतीय नागरिक अपने देश के प्रति रखता है । लेकिन वहां देश के नाम पर एक हो जाते हैं, और मर मिटने को तैयार हो जाते हैं । इससे प्रतीत होता है कि इनका मूल तत्व एकता है । और कहां भी गया है कि संगठन में शक्ति होती है और वहां के नागरिक जितना अपने देश के प्रति प्रेम रखता है उतना विश्व के प्रति । इसका ही परिणाम होगा कि अमेरिका में अपने देश के नागरिकों की अपेक्षा विश्व के देशों के नागरिक अधिक निवास करते हैं । यह भी देश को आगे बढ़ाने में बहुत बड़ा कारण है । कहा भी गया है वसुधैव कुटुम्बकम् ।

प्रश्न—अमेरिका में इतनी खूबी है, इतना समृद्ध है (हर दृष्टि में) तो क्या आपको ऐसा लगता है कि मेरा अगला जन्म अमेरिका में हो ?

उत्तर—मेरा अगला जन्म भारत में ही हो और मेरी क्या भारत के इर विद्वत व्यक्ति की यही इच्छा रहती है कि उसका हर बार जन्म भारत में ही हो । हालांकि अमेरिका हर दृष्टि से समृद्ध है और इस समृद्धि को देखकर यह इच्छा हर व्यक्ति की हो सकती है । लेकिन यह इच्छा मेरी नहीं है क्योंकि किन्हीं कारणों से भारत अमेरिका से पिछड़ रहा है लेकिन मैं नहीं समझता कि भारत में संसाधनों, क्षमता, आध्यात्मिकता, विचार और वह साधन जो किसी देश के विकास करने में सहायक होते हैं की कमी है । इसलिए मैं भारत को कमजोर नहीं मानता ।

मेरे एक मित्र अमेरिका में है और पेशे से वह डाक्टर है जिस संबंध में उन्होंने मुझसे कहा कि अगर मेरा जन्म मनुष्य योनि में होता है तो उसकी भूमि भारत ही हो । अगर कुत्ता, बिल्ली का होता है तो उसकी भूमि अमेरिका ही हो । क्योंकि यहां कुत्ता, बिल्ली आदि जानवरों को बड़े प्यार और हिफाजत से रखा जाता है ।

अमेरिका में भारत गली-2 मोहल्ले में बस गया है । यहां ताजमहल नाम का होटल है तथा यहां भारतीय व्यंजन हर होटल एवं रेस्टोरेंट में मिल जायेंगे, यहां हर्बल चाय बहुत मात्रा में मिलती है । हिन्दी समाचार पत्र निकलते हैं । हिन्दी के अलावा गुजराती अखबार भी निकलता है । यहां के निवासी भारतीय संस्कृति का बहुत सम्मान करते हैं ।

अगर व्यक्ति दूसरों के महलों को देखकर अपनी झोपड़ी छोड़ना चाहता है तो इसका मतलब है तो वह व्यक्ति राष्ट्र धर्म को नहीं जानता और अगर जानता होता तो उसके मन में यह विचार कभी जन्म नहीं लेता । बल्कि इसके विपरीत उस व्यक्ति को यह सोचना चाहिए कि मेरी झोपड़ी कब और किसी दिशा में परिश्रम करने पर बड़ी इमारत का रूप लेगी । और इसी राष्ट्र धर्म को ध्यान में रखते हुये मैंने भगवान से हर बार जन्म भारत में ही मांगा है और ऐसा विचार करने पर मुझे अपने उपर गर्व का अनुभव होता है ।

प्रश्न—अमेरिकावासियों के मन में गांधीजी के प्रति कैसी भावना है और क्या आपको वहां गांधीजी की कोई प्रतिमा दिखाई दी ?

उत्तर—अमेरिकावासियों में गांधीजी के प्रति बहुत श्रद्धा के भाव हैं जैसे तो गांधीजी ऐसी प्रतिमा हैं जो भारत अमेरिका क्या पूरे विश्व में सम्मान तथा स्थान के पात्र हैं । उन्होंने भारत में जो स्वतंत्रता संग्राम की मशाल जलाई उसका उदाहरण अन्य किसी देश के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में नहीं मिलता । गांधीजी राजनैतिक संत के साथ-साथ आध्यात्मिक संत भी थे और उन्होंने कहा है कि कोई व्यक्ति तो आध्यात्मिक उन्नति करता रहेगा और उसके पड़ोसी कष्ट भोगते रहेंगे । मेरा अद्वैत में विश्वास है । मैं मनुष्य जाति को ही नहीं प्राणी मात्र के ऐक्य को मानता हूँ । इसलिए एक आदमी को आध्यात्मिक लाभ होता है तो उसके साथ-2 सम्पूर्ण जगत को भी होता है । इससे प्रतीत होता है कि गांधीजी अपने देश की भलाई और

समृद्धि के ही नहीं बल्कि पूरे विश्व की भलाई एवं समृद्धि के लिए सोचते थे इसलिए उनका सम्मान करना और महान पुरुषों में स्थान रखना विश्व का हर देश गौरव का अनुभव करता है । उनमें से एक देश अमेरिका ही है ।

अमेरिका के विचारक थोरो ने महात्मा गांधी को बहुत प्रभावित किया और मार्टिन लूथर को अमेरिका का गांधी कहा जाता है । इन वाक्यों से पता लगाया जा सकता है कि गांधीजी का अमेरिका से और अमेरिका का गांधीजी से क्या संबंध है गांधीजी की प्रतिमा मुझे दो जगह दिखाई दी एक प्रतिमा । न्यूयार्क के संग्रहालय में दिखी उसी संग्रहालय में अभी कुछ समय पहले अमिताभ बच्चन की एक मोम की प्रतिमा स्थापित की गयी है । जो अति आकर्षक लगती है ।

प्रश्न— इस्कान के प्रति अमेरिका में विकास किस प्रकार हो रहा है जो कि संस्था प्रभुपादजी द्वारा स्थापित की गयी थी ?

उत्तर— इसके बारे में वहां में विशेष लोगों के सम्पर्क में नहीं आ पाया लेकिन इसके संबंध में मुझे जितनी जानकारी है उसके हिसाब से भक्ति वेदान्त पूरे अमेरिका में बड़ी तीव्रगति से फैल रहा है । वहां हर बड़े शहर में मंदिरों के निर्माण दिनों दिन हो रहे हैं जिनमें नियमित पूजा, भजन आदि मंदिर से संबंधित क्रियायें होती हैं । वहां कृष्णा के प्रति लोगों में जो भावना विकसित हुई है वह जरूर प्रभुपादजी द्वारा स्थापित इस्कान सोसायटी की परिणाम है । यह संस्था आज जिस रूप से कृष्णा का प्रचार प्रसार कर रही है वह अत्यंत प्रशंसनीय है । इस संस्था के द्वारा विश्व में लगभग 350 मंदिर स्थापित कर दिये गये हैं । जिनमें एक-एक मंदिर करोड़ों-2 की लागत का है । तथा गीता की पुस्तक का अनेकानेक भाषाओं में अनुवाद करके करोड़ों प्रतियां पूरे संसार में बिखेर दी गयी हैं ।

प्रभुपादजी के संबंध में मुझे जो कुछ भी ज्ञान है उसका विवरण इस प्रकार है —

एक बार प्रभुपाद अपने शयन कक्ष में सो रहे थे उसी निद्रावस्था में भगवान श्री कृष्ण ने स्वप्न दिया । और स्वप्न में कहा मेरा प्रचार प्रसार विदेशों में जाकर करें । और उस समय प्रभुपादजी ने मन में पक्का निश्चय कर लिया और उन्होंने अमेरिकाको प्रथम स्थान चुना । वह अमेरिका जाने की योजना में जुट गये । उन्होंने गीता का अपने हाथ से अंग्रेजी में अनुवाद किया, इसके बाद पानी के जहाज की किराये की व्यवस्था की और पूरी तैयारी के बाद 67 वर्ष की उम्र में हाथ में पानी के जहाज का टिकट और 7 डालर लेकर अमेरिका निकल पडे । जब प्रभुपादजी पानी के जहाज में यात्रा कर रहे थे कि मैं अमेरिका में 7 डालर से क्या करूंगा इस विचार के तुरंत बाद उनके मन ने तुरंत आवाज दी कि पतवार तो मेरे हाथ में है क्यों चिंता करते हो । यह आवाज श्री कृष्ण की थी और उसके बाद श्री प्रभुपाद निश्चित हो गये और जब उनका जहाज अमेरिका पहुंचा तो प्रभुपादजी जहाज से उतरकर एक सड़क के किनारे पहुंच गये और थोड़ी देर आराम करने के बाद उसी किनारे पर नृत्य करने लगे और मुख से महामंत्र का जाप करने लगे । हरे राम हरे राम । राम राम । हरे हरे हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण । हरे हरे ।

कुछ देर बाद वहां भीड़ एकत्र होने लगी लोगों ने उनसे वहीं कुछ प्रश्न किये तथा प्रभुपाद जी ने उनके उत्तर दिये । जिन उत्तरों से संतुष्ट होकर लोग उनके अनुयायी बनने लगे । यही वह देश है जहां इस काम की आधारशिला रखी गयी ।

प्रश्न— अमेरिका में किस धर्म के एवं किस देश के लोग अधिक निवास करते हैं?

उत्तर— अमेरिका की सबसे बड़ी विचित्रता यहीं है कि वहां अधिकांश लोग बाहर के ही हैं । वहां सभी धर्मों के लोग बड़ी प्रसन्नता तथा प्यार से रहते हैं । यहां के नेटिव रेड इंडियन न के बराबर हैं । एक आश्चर्य की बात है कि द्वितीय महायुद्ध में ऐसे रेड इंडियन लडने वालों की संख्या केवल दो थी । संक्षेप में सबसे

अधिक संख्या उन यूरोपीयनों की है जो व्हाइट अमेरिकन कहलाते हैं । दूसरी संख्या में नीग्रो है जो अफ्रीकी अमेरिकन कहलाते हैं । तीसरे न० पर एशियन की है । करीब 12 प्रतिशत इसी में 3 प्रतिशत भारतीय सम्मिलित है ।

प्रश्न— अमेरिका में बौद्ध धर्म की क्या स्थिति है ?

उत्तर— अमेरिकन विश्वविद्यालयों में बौद्ध धर्म का तुलनात्मक अध्ययन कराया जाता है । इसके लिए विश्व विद्यालय में स्वतंत्र विभाग है । इसके अलावा वहा सभी धर्मों का अध्ययन कराया जाता है । बौद्ध धर्म संबंधी शोध कार्य अत्यंत महत्वपूर्ण है । तथा यह विचारणीय है कि अमेरिका में चीन और जापान की अपेक्षा बौद्ध बहुत कम है । इन देशों में बौद्धों की अधिकता है ।